Nāsadīyam
A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
Volume 1, Issue 1 (Jan – Dec), 2022, Pp 49-52

चित्रपट का इतिहास

डॉ॰ शालू रानी
सहायक प्रवक्त्री (संगीत गायन विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरूक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ई-मेलः shalujoshi62@gmail.com
दूरभाषः 8295590130

संक्षेपिका

संगीत मानव हृदय का स्पंदन है। स्वर में असीम शक्ति है। इसी कारण संगीत भावाभिव्यक्ति का अत्यन्त साधारण माध्यम है। संगीत किसी भी मोड़ से गुजरे किसी भी आकार में ढले या किसी भी वर्ग में पले पर आनन्दमयी होता है अर्थात् संगीत के किसी भी दालान में प्रवेश कीजिये चाहे वह लोक संगीत हो, सुगम संगीत हो, चित्रपट संगीत हो, निश्चित रूप से आनन्द ही प्राप्त होगा। हमारे चित्रपट संगीत का आधार हमारा भारतीय संगीत ही रहा है। सीधी सरल भाषा चित्रपट में प्रयुक्त होने वाला संगीत चित्रपट संगीत कहलाया परन्तु प्रत्यक्ष में चित्रपट संगीत से- संगीत की ऐसी अनूठी धारा प्रवाहित हुई जिसमें सभी आनन्द विभोर होकर डुबकियां लगाते रहे है। भारतीय चित्रपट ने अपने उद्गम से ऐसा विकास किया है जो अब हमारे जीवन का अंश ही बन गया है। आज हम जो चित्रपट देखते है वह हमारे सामने अपने सर्वदा विकसित और परिष्कृत रूप में है। परन्तु यह रूप जो आज हमारे सामने है, यह कोई दिन, महीना या वर्ष में होने वाला चमत्कार नहीं यह शताब्दियों की मेहनत का फल था जिसको बाद में एक ऐसे व्यवसाय के रूप में अपनाया गया जो जनमानस की भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम बनकर सामने आया।

कुंजी शब्दः संगीत, क्रांतिकारी, चित्रपट, आलमआरा, पौराणिक।

शोधपत्र

मनुष्य अपने जन्म से ही मनोरंजनप्रिय रहा है। अतः मनोरंजन के नित्य नये साधन वह अपने लिये सदा खोजता रहता है। मनोरंजन के अनेक साधनों में चित्रपट एक सस्ता, सुलभ तथा अति मनोरंजक साधन है। समाज का सर्वोपरि मनोरंजन करने वाली कला जिसमें नाट्य और संगीत दोनों ही समाहित थे, चित्रपट संगीत के नाम से ही भारतीय हिन्दी चित्रपटों द्वारा उभरकर समाज के सामने आया। सरल भाषा में चित्रपट में प्रयुक्त होने वाला संगीत चित्रपट संगीत कहलाया, परन्तु प्रत्यक्ष में चित्रपट संगीत के रूप में संगीत की एक ऐसी अनूठी धारा प्रवाहित हुई जिसमें समाज के सभी वर्ग, जाति, धर्म एवं आयु के नर-नारी आनन्द विभोर होकर डुबकियां लगाते रहे है। उसका मुख्य कारण है कि जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़ा हुआ संगीत चित्रपट संगीत के रूप में हमारे पास है। भारतीय चित्रपट ने अपने उद्गम से ऐसा विकास किया है जो अब हमारे जीवन का अंश ही बन गया है। भारतीय चित्रपट का उद्गम किस प्रकार हुआ? विश्व में चित्रपट बनाने की तकनीक का प्रारम्भ कैसे और कहाँ से हुआ? यह तकनीक भारत में कहाँ से पहुँची? इसके बारे में जानना आवश्यक है।

आज हम जो चित्रपट देखते हैं वह हमारे सामने प्रत्येक प्रकार से विकसित और परिष्कृत रूप है, परन्तु ये रूप जो आज हमारे सामने है यह कोई दिन महीना या वर्ष में होने वाला चमत्कार या कोई क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं है। यह छोटे-छोटे शोधकार्यों का शताब्दियों की मेहनत और लगन का फल था जिसको बाद में एक ऐसे व्यवसाय

के रूप में बनाया गया जिसमें मनोरंजन था, शिक्षा थी और जनमानस की भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम बनकर सामने आया।

लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष पुरानी बात है, पूर्वी जर्मनी का एक युवा गणितज्ञ गणित के किसी प्रश्न को हल कर रहा था, वह कुर्सी पर बैठा था और सामने मेज पर लैम्प जल रहा था, सोचते-सोचते उसकी दृष्टि दीवार की ओर गई वहाँ उसे अपनी टोपी की छाया दिखाई दी उसे देखकर घोड़े पर सवार मनुष्य का आभास हुआ। जिसे देखकर उस युवक को आश्चर्य हुआ और अच्छा भी लगा। वह तेजी से सिर हिलाने सा लगा, ऐसा लग रहा था कि घुड़सवार भी तेजी से दौड़ रहा है। बस यहीं से चित्रपट बनाने की कल्पना और कहानी प्रारम्भ होती गई। उस गणितज्ञ का नाम था एथनासियसफिर्चर। सन् 1645 ई. में उसने एक लालटेन बनाई, जिसे उसने जादुई लालटेन कहा। रेखांकित चित्रों को वह इस लालटेन के सामने रखता व उसकी छाया दीवार पर दिखाता। यह चित्रपट का प्रथम प्रदर्शन था।

फ्रांस ही वह प्रथम देश और फ्रांसीसी ही वे भाग्यशाली लोग रहे जिन्हें संसार में सबसे पहले सिनेमा देखने का अवसर मिला। वह दिन 28 दिसम्बर सन् 1895 ई॰ का था। नगर पैरिस और ग्रांड कैफे का बेसमेन्ट। यहाँ लुईस एवं आगस्ट ल्युमिएर ब्रदर्स ने कौतहल से भरे दर्शकों को लगभग एक मिनट तक चित्रपट के कुछ भाग दिखाये, यही था चित्रपट का जन्म जिसके प्रथम सार्वजनिक प्रदर्शन को एक वर्ष के भीतर ही ल्युमिएर बन्धुओं ने संसार के सभी महत्त्वपूर्ण देशों में पहुँचा दिया। दस वर्षों में चित्रपट ने इतनी उन्नति कर ली कि लोगों ने इसे 'आश्चर्यजनक अजूबा' मानना बंद कर दिया। फ्रांस का जो स्थान इस क्षेत्र में बना था वह अमेरिका ने ले लिया और सन् 1914 ई. तक चित्रपट निर्माण के क्षेत्र में अमेरिका का स्थान महत्त्वपूर्ण हो गया।

15 अप्रैल 1911 का वो दिन था जब बम्बई के 'अमेरिका-इंडिया सिनेमा' नामक छविगृह में ईस्टर के पर्व पर 40 वर्षीय फाल्के 'लाइफ ऑफ क्राइस्ट' देखकर आँखों में चित्रपट बनाने का सपना लिये घर लौट आए। पूरी रात इसी उधेड़बुन में निकल गई कि किस प्रकार अपने देश में चित्रपट बनाया जाये। आमदनी का कुछ माध्यम नहीं था धीरे-धीरे अपनी सम्पत्ति बेची श्रीमति फाल्के ने भी अपने गहने गिरवी रख दिये, बीमा पॉलिसी गिरवी रख दी। दादा फाल्के उस समय बड़ी कठिनाइयों के दौर से गुजर रहे थे। लगातार चित्रपट देखने से आँखें खराब हो गई थी। डॉ॰ प्रभाकर ने समय पर इलाज करके उनकी आँखों को बचा लिया। 9 महीने के पश्चात् स्वदेशी चित्रपट बनाने का सपना आँखों में लिये दादा फाल्के 2 फरवरी 1912 को इंग्लैण्ड रवाना हो गये। दो माह के इंग्लैण्ड प्रवास के समय उन्होंने चित्रपट निर्माण कला का गहन अध्ययन करने के अतिरिक्त विलियम सन् चित्रपट कैमरे से शूटिंग भी की और परिणाम भी देखे। अप्रैल में दादा साहब चित्रपट बनाने के उपकरण (चित्रपट कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफोरेटिंग मशीन और कच्ची मशीन फिल्म) लेकर स्वदेश लौट आए और सितम्बर 1912 में भारत की प्रथम फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' का निर्माण प्रारम्भ कर दिया। आठ महीने तक बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करने के पश्चात् चित्रपट पूरा हुआ और 21 अप्रैल 1913 को बम्बई के ओलम्पिया थियेटर में इसका विशेष शो हुआ जिसमें उद्योगपति, व्यवसायी, वकील तथा जज आदि उपस्थित थे। इस प्रकार भारत में दादा फाल्के की इस क्रांति ने युग परिवर्तन कर दिया और अविष्कारों की विकसित होती हुई परम्परा के अंतर्गत भारत का प्रथम चित्रपट 'राजा हरिश्चन्द्र' हमारे सम्मुख आया और यहीं से हम देखते हैं कि भारतीय और हिन्दी चित्रपट का रूप बदलता गया।

भारतीय (हिन्दी) चित्रपट इतिहास को हम दो भागों में बाँट सकते हैं। प्रथम भाग में उन चित्रपटों को लिया जा सकता है जो मूक थे, इसमें ध्वनि आदि की व्यवस्था नहीं थी। दूसरे भाग में सवाक् चित्रपटों को लिया जा सकता है।

क) मूक चित्रपट युग (1913 **से** 1934 **तक)**

ख) सवाक् चित्रपट युग (1931 **से आज तक)**

क) मूक चित्रपट युगः- मूक युग से तात्पर्य चित्रपट का वह युग जिसमें ध्वनि का प्रारम्भ नहीं हुआ था। भारत में चित्रपट के निर्माण का श्रीगणेश प्रमाणिक तथ्यों के आधार पर स्व० श्री धुंड़ीराज गोविन्द फाल्के (**1870-1941)** के स्वनिर्मित प्रथम पौराणिक चित्रपट 'राजा हरिश्चन्द्र' से हुआ है। 'राजा हरिश्चन्द्र' को प्रथम हिन्दी चित्रपट माना गया है, क्योंकि इसके शीर्षक को दर्शाने के लिये हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है। दादा साहब ने 'राजा हरिश्चन्द्र' के बाद **1912** और **1917** तक अपनी फिल्मों के कथानक पौराणिक कथा साहित्य पर ही चुने और 'पुण्डलीक' कृष्णजन्म, 'कालियामर्दन', 'सत्यवान-सावित्री', 'लंकादहन', 'भस्मासुर-मोहिनी' आदि फिल्में बनाई।

ख) सवाक् युगः- सवाक् युग से तात्पर्य उस समय से है जब भारतीय चित्रपट में ध्वनि का प्रवेश हुआ। हिन्दी चित्रपट का प्रथम सवाक् चित्रपट 'आलमआरा' था जिसके संवाद, गीत आदि हिन्दुस्तानी में बोले गये थे। इसे **1931** ई. में श्री आर्देशिर ईरानी की चित्रपट निर्माण संस्था इंपीरियल फिल्म कंपनी ने बनाया था। इस चित्रपट के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसके निर्माण सम्पादन तकनीकी पक्ष में किसी विदेशी तकनीशियन की सहायता नहीं ली गई जैसे पहले ली जाती थी। इस प्रथम सवाक् चित्रपट की भाषा के विषय में स्वयं निर्माता ईरानी ने उस समय दिये गये अपने भाषण में स्पष्टीकरण देते हुए कहा था 'आलमआरा' की भाषा न खास उर्दू और न खास हिन्दी अर्थात् दोनों की मिली-जुली हिन्दुस्तानी भाषा है। यह हिन्दुस्तानी भाषा का ही एक रूप है। भारतीय चित्रपट इतिहास में एक क्रांति का उदय हुआ और 14 मार्च 1931 का दिन भी इतिहास में सुवर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

संदर्भ सूची

1. गर्ग, उमा, संगीत का सौंदर्य बोध (फिल्म संगीत के संदर्भ में), पृष्ठ 1-2
2. गर्ग, उमा, संगीत का सौंदर्य बोध (फिल्म संगीत के संदर्भ में), पृष्ठ-7
3. बच्चन, श्रीवास्तव, भारतीय फिल्मों की कहानी, पृष्ठ-15
4. काज़मी, स्वामी वाहिद, (1988), फिल्म संगीत का इतिहास जनवरी-फरवरी, पृष्ठ-18
5. कुमार, कौशिक, कथा चित्रों के मुख्य से शब्द के उद्भव की रोचक कथा, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, पृष्ठ-25
6. स्वामी, एस.कृष्ण, (1980), इंडियन फिल्म, पृष्ठ-16
7. गर्ग, उमा, संगीत का सौन्दर्य बोध (फिल्म संगीत के संदर्भ में), पृष्ठ-3
8. दत्त, शरद, कहाँ गये वो लोग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, पृष्ठ 13-14
9. बसु, दीपिका, (1988), धर्मयुग, पृष्ठ-28
10. मित्तल, महेन्द्र, (1975), भारतीय चलचित्र का इतिहास, पृष्ठ-9

11. मित्तल, महेन्द्र, (1975), भारतीय चलचित्र का इतिहास, पृष्ठ-10
12. डॉ॰ विमल, भारतीय चित्रपट का इतिहास, पृष्ठ-29
13. फिल्म फेयर, 22 मार्च 1963, पृष्ठ-19
14. बच्चन, श्रीवास्तव, भारतीय फिल्मों की कहानी, पृष्ठ-40
15. काज़मी, वाहिद, (1988), फिल्म संगीत का इतिहास अंक जनवरी-फरवरी, पृष्ठ-23